संकल्प

HINDI LITERACY TEAM
CHANDIGARH

मैं हूँ प्रेरक

आज प्रेरक घर लौटते हुए रास्ते में प्रेरणा दीदी से बोला, “आपने कहा था कि आप रोज़ कुछ नया बताएँगी ।”

प्रेरणा बोली, “आज मैं आपको लोकगीत के बारे में बताकर अपनी लोक संस्कृति से जोड़ने का प्रयास करूँगी।”

और मैं हूँ प्रेरणा

लोकगीत

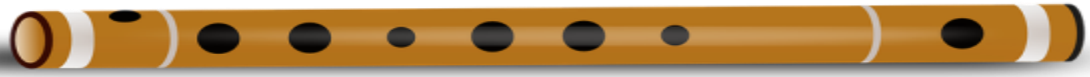

लोकगीत लोक के गीत हैं जिसे पूरा लोक गाता है, अपनाता है, अपनी उमंग में झूम जाता है।

महात्मा गाँधी के शब्दों में - "लोकगीत जनता की भाषा है ..... लोक गीत हमारी संस्कृति की पहरेदार है।"

देवेन्द सत्यार्थी के अनुसार, "लोकगीत किसी संस्कृति के मुँह बोले चित्र हैं।"

रवीन्द्रनाथ टैगोर के अनुसार, "लोकगीत संस्कृति का सुखद संदेश ले जाने वाली कला है।"

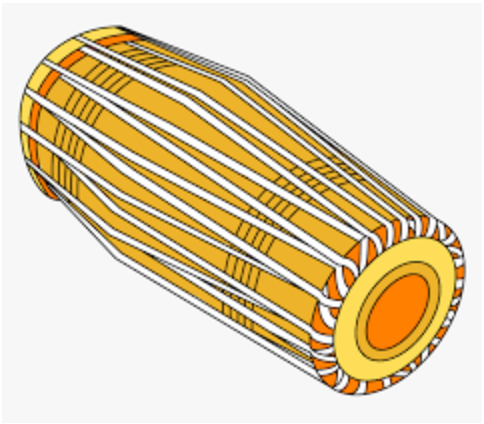

लोकगीत:हमारी संस्कृति

लोकगीत मुकाबला: दलीय गायन

लोकगीत: विविध रूप

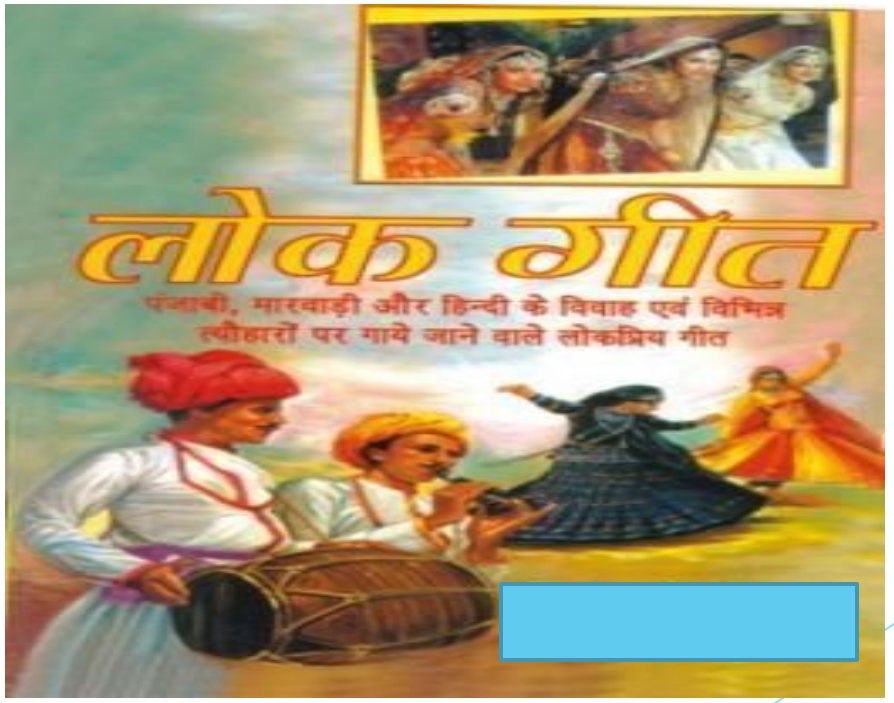

प्रेरक: किसी देश की संस्कृति का परिचय उस देश के लोक साहित्य से प्राप्त हो जाता है। लोक साहित्य समाज की आत्मा का उज्ज्वल प्रतिबिम्ब है। किसी देश की जातीय , राष्ट्रीय, साहित्यिक, सामाजिक, ऐतिहासिक, धार्मिक एवं आर्थिक मापदंड के लिए यदि कोई पैमाना हमारे पास है तो वह उस देश का लोक साहित्य ही है। लोकगीत उनमें से एक प्रमुख विधा है। क्या तुम्हें लोकगीत के बारे में कुछ पता है?

प्रेरणा: हाँ.. हाँ.. प्रेरक पता है । मैं तुम्हें विस्तार से बताती हूँ ।

लोकगीत में लोक और गीत दो शब्दों का योग है जिसका अर्थ है लोक के गीत। लोक शब्द वास्तव में अंग्रेजी के 'फोक' का पर्याय है जो नगर तथा ग्राम की समस्त साधारण जन का द्योतक है , आचार्य हजारी प्रसाद द्विवेदी के अनुसार - 'लोक' शब्द का अर्थ जनपद या ग्राम नहीं है बल्कि नगर व गावों में फैली हुई समूची जनता है।

प्रेरक: फिर तो प्रेरणा तुम्हारी बातों से लगता है कि लोक साहित्य की इन विधाओं में लोकगीत सर्वाधिक सशक्त एवं प्रभावशाली विधा है। मुझे ये भी लगता है कि लोकगीत लोकरंजन एवं लोकमंगल के महत्त्वपूर्ण साधन हैं। प्रेरणा यह बताओ कि लोकगीतों की रचना के प्रमुख कारण क्या हैं ?

प्रेरणा: अरे प्रेरक ! तुम तो जानते ही हो, मानवीय जीवन दुखों एवं प्रभावों की एक लम्बी गाथा है । मानव जीवन में आए दिन कितने ही दुख , संकट एवं बाधाएँ आती रहती हैं जब हर्ष(ख़ुशी) या विषाद(दुःख) की कोई भावधारा हृदय को छू जाती है तो हृदय वीणा की तार की तरह झनझना उठते हैं । हृदयस्थ भाव अभिव्यक्ति हेतु बेचैन हो उठते हैं तथा लयात्मक रूप से व्यक्त होकर लोकगीत का रूप धारण कर लेते हैं ।

- प्रेरक: अच्छा ! इसका मतलब यह है कि “लोकगीत सरल , स्वछन्द एवं मधुर इसलिए होते हैं क्योंकि इनका निर्माण लोक (आम जन) द्वारा, लोक के लिए, शान्त और स्वछन्द वातावरण में हरे-भरे दूर तक फैले खेतों के मेड़ों, बहते झरनों, गदराई अमराइयों और विकसित होती हुई कलियों के बीच खुले आकाश के नीचे होता है।”

अच्छा! लोकगीतों के उद्भव- विकास, इनके रचयिता के बारे में तो कुछ बताओ ।

- प्रेरणा: बिल्कुल! क्यों नहीं, लोकगीतों के उद्भव एवं विकास के बारे में विद्वानों में मतभेद रहा है। लोकगीतों का सृजन कैसे हुआ? इसके रचियता कौन हैं? कई ऐसे विवादास्पद प्रश्न हैं जिनका स्पष्टीकरण अत्यन्त आवश्यक है।

- प्रेरक: अब सुनो प्रेरणा ! वस्तुतः लोकगीत का सृजन बीज रूप में सर्वप्रथम एक व्यक्ति द्वारा होता है,फिर मौखिक परम्परा में रहने के कारण अन्य व्यक्तियों द्वारा समय - समय पर संबोधित होता रहता है। यही कारण है कि एक ही गीत के कई पाठान्तर(एक ही गीत के विभिन्न रूप) प्रायः उपलब्ध होते हैं।

प्रेरणा : अच्छा ! फिर तो इतनी देर तुम मुझे परख रहे थे । पर चलो, आज तो हमने बड़ी काम की बात कर ली। मुझे तो लगता था लोकगीत गाँव के लोगों द्वारा गाए जाते हैं जिनका कोई खास उद्देश्य नहीं होता, लेकिन अब समझ आया कि लोकगीत लोक में उल्लास, उमंग का संचार करते हैं। इनका लोक में बहुत महत्त्व है। ये हमारी संस्कृति के परिचायक हैं।

लोकगीतों में प्रयुक्त होने वाले वाद्ययन्त्र

एकतारा

सारंगी

बीन

बांसुरी

शहनाई

मंजीरा

नगाड़ा

ढ़ोल

ढोलकी

डमरू

डेरु

डफली

ताशा

खडताल

अहा ! इसे
भी जानते हैं

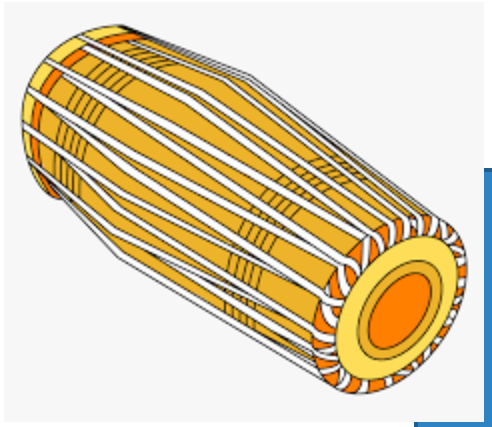

राज्य	लोकगीत	नृत्य
बिहार	कजरी, बिदेसिया, चैता, सावन	जट-जटिन
पंजाब	माहिया	झूमर/गिद्दा
बुंदेलखंड	आल्हा	मोनिया नृत्य
गुजरात	माहिया	गरबा
पहाड़ी इलाके	पहाड़ी गीत	समूह नृत्य
बंगाल	बाउल/भतियाली	छाऊ
उत्तर प्रदेश	चैता/कजरी, बिरहा, बारहमासा	चरकुला

होली गीत के विविध प्रकारों को जानने हेतु नीचे दिए गए लिंक पर क्लिक करें:-

Faag Chautaal – Thakurbhimsingh.com

समझ-समझ के--

1. किसके अनुसार लोकगीत किसी संस्कृति के मुहबोले चित्र हैं?
क) लोक　　ख) रवीन्द्रनाथ टैगोर
ग) महात्मा गाँधी　　घ) देवेन्द्र सत्यार्थी

2. आचार्य हजारी प्रसाद द्विवेदी के अनुसार 'लोक' शब्द का क्या अर्थ है?

3. उचित मिलान कीजिए-

राज्य	***लोकगीत/नृत्य***
बंगाल	बिरहा
उत्तर प्रदेश	छाऊ
बिहार	गिद्दा
बुंदेलखंड	आल्हा
पंजाब	चैता

4. बेटियों के जन्म पर गाए जाने वाले लोकगीत, बेटों के जन्म पर गाए जाने वाले लोकगीतों की तुलना में बहुत ही कम रचे गए हैं -क्या कारण रहे होंगे, अपने विचार लिखें।

पुत्र जन्म पर गाये जाने वाले एक गीत का उदाहरण इस लिंक पर क्लिक करें

https://youtu.be/BNd-PUhd0Vw

5. मान लीजिए एक असली टी सीरीज लोकगीत सी.डी. की कीमत 200 रूपए है और उसी लोकगीत की पायरेटेड(नकली) सी.डी. 70 रूपए में मिल रही है, किसी ने 150 पाइरेटेड सी.डी. बाजार में बेच दी, तो टी सीरीज कम्पनी को कितनी हानि हुई?

उत्तरमाला :

1. देवेन्द सत्यार्थी के अनुसार, “लोकगीत किसी संस्कृति के मुँह बोले चित्र हैं।”

2. ‘लोक’ शब्द का अर्थ जनपद या ग्राम नहीं है, बल्कि नगर व गावों में फैली हुई समूची जनता है।

3.

राज्य	**लोकगीत/नृत्य**
बंगाल	छाऊ
बिहार	चैता
बुंदेलखंड	आल्हा
पंजाब	गिद्दा

‘संकल्प’ पत्रिका का यह अंक कक्षा छठी की पाठ्यपुस्तक वसंत भाग -1 के पाठ ‘लोकगीत’, कक्षा नौवीं की पाठ्यपुस्तक क्षितिज भाग -1 के पाठ ‘ग्राम श्री’ एवं कक्षा दसवीं की पाठ्यपुस्तक क्षितिज भाग -2 के पाठ ‘बालगोबिन भगत’ से प्रेरित है।यह सीखने के विभिन्न प्रतिफल: स्वाभाविक अभिव्यक्ति, कल्पनाशीलता, कौशल और सोच, अनुमान और कल्पना, कला सम्बन्धी दक्षता एवं रूचि को पूर्ण करता है।

4.
i समाज में बेटियों को कहीं न कहीं बोझ मानने की प्रवृत्ति।
ii उत्तराधिकारी बेटे के होने की चाह ।
iii अधिकांश लोकगीतों के पुरुष रचनाकार होना:एक प्रमुख कारण ।
iv औसत भारतीय का बेटी के प्रति “सिद्धांत एवं व्यवहार में जमीन आसमान का अंतर”।
(छात्रों द्वारा दिए गए अन्य संगत उत्तर भी मान्य)

5. 19,500 रूपए की हानि हुई ।

इस लिंक पर क्लिक करें और होली फाग गीत का आनन्द लें।
https://youtu.be/gXfHsNvdwEA